[This question paper contains 2 printed pages.] 2019

SHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

18

**Your Roll No.** 2019

**Sr. No. of Question Paper : 2444** **JC**

Unique Paper Code : 12051101 – OC

Name of the Paper : हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS (OC)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी प्रश्न** अनिवार्य हैं ।

1. आधुनिक आर्य भाषाएँ कौन-कौन सी हैं ? उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए । (14)

**अथवा**

आदिकाल और मध्यकाल में हिंदी के क्रमिक विकास को स्पष्ट कीजिए ।

2. राजभाषा के रूप में हिंदी की सांवैधानिक स्थिति पर प्रकाश डालिए । (14)

P.T.O.

अथवा

अखिल भारतीय संदर्भों में हिंदी की स्थिति का आकलन कीजिए।

3. लिपि किसे कहते हैं ? भाषा और लिपि के अंतर्संबंधों की विवेचना कीजिए। (14)

अथवा

चित्रलिपि और भावलिपि का विस्तृत परिचय दीजिए।

4. आदर्श लिपि का अर्थ स्पष्ट करते हुए देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (14)

अथवा

देवनागरी लिपि का परिचय देते हुए उसके मानकीकरण पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी ;

(ii) पूर्वी हिंदी की बोलियाँ ;

(iii) लिपि की आवश्यकता ;

(iv) संचार भाषा ;

(v) देवनागरी लिपि और कम्प्यूटर। (6,6,7)

[This question paper contains 6 printed pages.]

(19) **Your Roll No.** 2019

**Sr. No. of Question Paper : 2445** **JC**

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Unique Paper Code : 12051102 – OC

Name of the Paper : हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS (OC)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

## छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो की काव्य-कला की विवेचना कीजिए।

**अथवा**

विद्यापति की शृंगार-भावना पर प्रकाश डालिए। (12)

P.T.O.

2. कबीर भक्त हैं या समाज सुधारक – स्पष्ट कीजिए।

**अथवा**

'मधुमालती' के आधार पर मंझन के नख–शिख वर्णन की विशेषताएँ लिखिए। (12)

3. सूरदास के काव्य में वर्णित वात्सल्य पक्ष का विवेचन कीजिए।

**अथवा**

मीराबाई के पदों की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए। (12)

4. तुलसीदास के काव्य में भक्ति–भावना के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

**अथवा**

तुलसीदास की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) अब का डरौं डर डरहि समान,

जब थैं मोर तोर पहिचांन ।। टेक ।।

जब लग मोर तोर करि लीन्हा, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा।



आगम निगम एक करि जांनां, ते मनवां मन माहि समांनां।

जब लग ऊँच नीच करि जांनां, ते पसुवा भूले भ्रम नांनां।

कहि कबीर मैं मेरी खोई, तबहि रांम अवर नहीं कोई।

**अथवा**

ऊधौ मन माने की बात।

दाख छुहारा छाँड़ि अमृत–फल, विषकीरा विष खात।

ज्यौं चकोर कों देइ कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।

मधुप करत घर कोरि काठ मै, बँधत कमल के पात।

ज्यौं पतंग हित जानि आपनौ, दीपक सौं लपटात।

सूरदास जाकौ मन जासौं, सोई ताहि सुहात। (8)

(ख) नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।

लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ।।

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाई सोई लीन्ही।

नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी।

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारित हरना।

मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी।

अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना।

नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ।।

**अथवा**

अवधेसके द्वारें सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे।

अवलोकि हौं सोच बिमोचन को ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक-से ।।

तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन नैन सुखंजन-जातक-से।

सजनी ससिमें समसील उभै नवनील सरोरुह-से बिकसे ।।

(7)

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना कौशल विश्लेषित कीजिए : (6×2=12)

(क) छापा तिलक तज दीन्ही रे, तो से नैना मिला के।

प्रेम बटी का मदवा पिलाके

मतवारी कर दीन्ही रे, मो से नैना मिला के।

'खुसरो' निज़ाम पै बलि-बलि जइए,

मोहे सुहागन कीन्ही रे, मो से नैना मिला के।

(भाषा-शिल्प)

**अथवा**



ए सखि पेखलि एक अपरूप।

सुनइत मानबि सपन-सरूप ।।

कमल जुगल पर चाँदक माला।

तापर उपजत तरुन तमाला ।।

तापर बेढलि बीजुरी-लता।

कालिंदी तट धीरे चलि जाता ।।

साखा-सिखर सुधाकर पाँति।

ताहिं नब पल्लव अरुनक भाँति ।। (भाव सौंदर्य)

(ख) कबीर पाँहन केश पूतला, करि पूजै करतार।

इँह र भरोसै जे रहे, ते बूड़े काली धार ।।

कबीर मन मथुरा दिल द्वारिका, काया कासी जांणि।

दसवां द्वारा देहुरा, तामैं जोति पिछांणि ।।

(भक्ति-तत्त्व)

**अथवा**

आली रे म्हारे णेणाँ बाण पड़ी ।। टेक ।।

चित चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी।

कब री ठाड़ो पंथ निहाराँ, अपने भवण खड़ी।

अटक्याँ प्राण सांवरो प्यारो, जीवण मूर जड़ी।

मीराँ गिरधर हाथ बिकाणी, लोग कह्याँ बिगड़ी।।

(प्रेम भावना)

This question paper contains 2 printed pages]

**Roll No.** | | | | | | | |2|0|1|9|

S. No. of Question Paper : **3553** (20)

Unique Paper Code : **12051101**

Name of the Paper : **हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास**

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

*(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)*

1. भारतीय आर्य भाषाओं का परिचय दीजिये। 14

**अथवा**

आधुनिक काल में हिंदी की स्थिति को स्पष्ट कीजिये।

2. राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के विकास को स्पष्ट कीजिये। 14

**अथवा**

हिंदी की प्रमुख बोलियों का परिचय दीजिये।

3. लिपि की परिभाषा देते हुए, भाषा और लिपि का अंतर स्पष्ट कीजिये। 14

**अथवा**

लिपि का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिये।

4. देवनागरी लिपि पर अन्य लिपियों के प्रभाव को रेखांकित कीजिये। 14

**अथवा**

देवनागरी लिपि और कंप्यूटर के अंत:संबंध पर विचार कीजिये।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 6+6+7

(क) पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ

(ख) हिंदी का आरंभिक रूप

(ग) संचार भाषा

(घ) आदर्श लिपि

(ङ) हिंदी भाषा का क्षेत्र।

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. 2019

Deshbandhu College LIBRARY Kalkaji, New Delhi

S. No. of Question Paper : 3554

Unique Paper Code : 12051102

Name of the Paper : हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

*(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)*

**सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. अमीर खुसरो का काव्य लौकिक एवं अलौकिक दोनों पक्षों को अभिव्यक्त करता है। स्पष्ट कीजिये।

**अथवा**

विद्यापति के काव्य-सौंदर्य की समीक्षा कीजिये। 12

2. कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये।

**अथवा**

'मधुमालती' की काव्य भाषा पर विचार कीजिये। 12

3. सूरदास की विरह भावना पर प्रकाश डालिये।

**अथवा**

मीरा काव्य में स्त्री वेदना की विवेचना कीजिये। 12

4. तुलसी काव्य में राम के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

**अथवा**

रामचरितमानस के आधार पर तुलसी की समन्वयवादी दृष्टि पर विचार कीजिये। 12

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 8+7

(क) छाप-तिलक तज दीन्ही रे, तोसे नैना मिला के।

प्रेम बटी का मदवा पिलाके

मतवारी कर दीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।

'खुसरो' निजाम पै बलि-बलि जइए,

मोहे सुहागन कीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।

**अथवा**

कबीर औगुँण ना गहैं, गुँण ही कौ लें बीनि।

घट घट महु के मधुप ज्यूँ, पर आत्म ले चीन्हि।।

बसुधा बन बहुँ भाँति है, फूल्यो फल्यौ अगाध।

मिष्ट सुबास कबीर गहि, विषम कहै किहि साथ।।

(ख) पग बाँध घूँघरयाँ णाच्यारी।।

लोग कह्या मीराँ बाबरी, सासु कह्याँ कुलनासाँ री

बिख रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीराँ हाँसाँ री।



तण मण बार्‌याँ परि चरिणामाँ दरसण अमरित प्यास्याँ री।

मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थ्यारी धारी सरणाँ आस्याँ री।।

**अथवा**

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकी जानी भली।

तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ कछू, मुसुकाइ चली।

तुलसी तेहि औसर सबै अवलोकति लोचनलाहु अली।

अनुराग-तड़ाग में भानु उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं।।

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना-कौशल विश्लेषित कीजिये : 2×6=12

(क) जहाँ-जहाँ पद-जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरूह झरई

जहाँ-जहाँ झलकए अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग।।

कि हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ—मधि मोरि

जहाँ-जहाँ नयन-विकास। ततहिं कमल-प्रकास।।

(भाषा सौंदर्य)

**अथवा**

महाई म्हाँ गोविन्द गुण गाणा।।

राजा रूठ्याँ नगरी त्यागाँ, हरि रूठ्याँ कठ जाणा।

राणो भेज्या विख रो प्यालो, चरणामृत पी जाणा।

काला नाग पिटारयाँ भेज्या, सालगराम पिछाणा।

मीरा गिरधर प्रेम दिवाँणी, साँवल्या वर पाणा।

(स्त्री वेदना)

(ख) ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।

हंस सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजनि की छांही।।

वै सुरभी वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।

ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं।।

(प्रकृति चित्रण)

**अथवा**

सिथिल स्नेह कहैं कौसिला सुमित्राजू सों,

मैं न लखी सौति, सखी! भंगिनी ज्यों सेई है

कहै मोहि भैया, कहौं—मैं न मैया, भरत की

बलैया लेहौं भैया, तेरी मैया कैकेई है।।

(पारिवारिक प्रेम)